गीत

दिनेश सिंह
(1947-2012)

दिनेश सिंह का नाम हिंदी साहित्य में बड़े अदब से लिया जाता है। सही मायने में कविता का जीवन जीने वाला यह गीत कवि अपनी निजी जिन्दगी में मिलनसार एवं सादगी पसंद रहा। गीत-नवगीत साहित्य में इनके योगदान को ऐतिहासिक माना जाता है। दिनेश जी ने न केवल तत्कालीन गाँव-समाज को देखा-समझा और जाना-पहचाना उसमें हो रहे आमूल-चूल परिवर्तनों को, बल्कि इन्होंने अपनी संस्कृति में रचे-बसे भारतीय समाज के लोगों की भिन्न-भिन्न मनःस्थिति को भी बखूबी परखा, जिसकी झलक इनके गीतों में पूरी लयात्मकता के साथ दिखाई पड़ती है। अज्ञेय द्वारा संपादित 'नया प्रतीक' में आपकी पहली कविता प्रकाशित हुई थी। 'धर्मयुग', 'साप्ताहिक हिन्दुस्तान' तथा देश की लगभग सभी बड़ी-छोटी पत्र-पत्रिकाओं में आपके गीत, नवगीत तथा छन्दमुक्त कविताएं, रिपोर्ताज, ललित निबंध तथा समीक्षाएं निरंतर प्रकाशित होती रहीं हैं। 'नवगीत दशक' तथा 'नवगीत अर्द्धशती' के नवगीतकार तथा अनेक चर्चित व प्रतिष्ठित समवेत कविता संकलनों में गीत तथा कविताएं प्रकाशित। 'पूर्वाभास', 'समर करते हुए', 'टेढ़े-मेढ़े ढाई आखर', 'मैं फिर से गाऊँगा' आदि आपके नवगीत संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। चर्चित व स्थापित कविता पत्रिका 'नये-पुराने' (अनियतकालीन) के आप संपादक रहे। उक्त पत्रिका के माध्यम से गीत पर किये गये आपके कार्य को अकादमिक स्तर पर स्वीकार किया गया है। स्व. कन्हैया लाल नंदन जी लिखते हैं "बीती शताब्दी के अंतिम दिनों में तिलोई (रायबरेली) से दिनेश सिंह के संपादन में निकलने वाले गीत संचयन 'नये-पुराने' ने गीत के सन्दर्भ में जो सामग्री अपने अब तक के छह अंकों में दी है, वह अन्यत्र उपलब्ध नहीं रही । गीत के सर्वांगीण विवेचन का जितना संतुलित प्रयास 'नये-पुराने' में हुआ है, वह गीत के शोध को एक नई दिशा प्रदान करता है। गीत के अद्यतन रूप में हो रही रचनात्मकता की बानगी भी 'नये-पुराने' में है और गीत, खासकर नवगीत में फैलती जा रही असंयत दुरूहता की मलामत भी। दिनेश सिंह स्वयं न केवल एक समर्थ नवगीत हस्ताक्षर हैं, बल्कि गीत विधा के गहरे समीक्षक भी। (श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन- स्व. कन्हैया लाल नंदन, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2009, पृ. 67)।" राजीव गांधी स्मृति सम्मान, अवधी अकेडमी सम्मान, पंडित गंगासागर शुक्ल सम्मान, बलवीर सिंह 'रंग' पुरस्कार से अलंकृत।

-डॉ अवनीश सिंह चौहान
साहित्य सम्पादक
09456011560

हम छले गए

हमने-तुमने
जब भी चाहा
द्वापर-त्रेता सब चले गये!
हम छले गये!

रथ नहीं रहे
ना अश्व रहे
ना दीर्घ रहे
ना ह्रस्व रहे
मुट्ठी में तनी हुईं
वल्गाओं के
छूटे वर्चस्व रहे

उनकी पीठों से
छिटके हम
अपनी ही पीठें मले गये
हम छले गये!

ना छंद रहे
ना मंत्र रहे
जो यावत रहे
स्वतंत्र रहे
चुप्पी में रहे आग बनकर
आहट पर मारक यन्त्र रहे

'कुरु स्वाहा'
दूजे पर हिम-सा गले गये
हम छले गये!

दिन घटेंगे

जनम के सिरजे हुए दुख
उम्र बन-बनकर कटेंगे
जिन्दगी के दिन घटेंगे

कुंआ अँधा बिना पानी
घूमती यादें पुरानी
प्यास का होना वसंती
तितलियों से छेड़खानी

झरे फूलों से पहाड़े-
गंध के कब तक रटेंगे?
जिन्दगी के दिन घटेंगे

चढ़ गये सारे नसेड़ी
वक्त की मीनार टेड़ी
'गिर रही है-गिर रही है'-
हवाओं ने तान छेड़ी

मचेगी भगदड़ कि कितने
स्वप्न
लाशों से पटेंगे
जिन्दगी के दिन घटेंगे

परिंदे फिर भी चमन में
खेत-बागों में कि वन में
चहचहायेंगे
नदी बहती रहेगी उसी धुन
में
चप्पुओं के स्वर लहर
बनकर
कछारों तक उठेंगे
जिन्दगी के दिन घटेंगे।

चलो देखें...

चलो देखें,
खिड़कियों से
झाँकती है धूप
उठ जाएँ।
सुबह की ताजी हवा में
हम नदी के साथ
थोड़ा घूम-फिर आएँ!

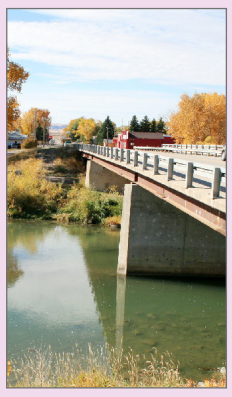

चलो, देखें,
रात-भर में ओस ने
किस तरह से
आत्म मोती-सा रचा होगा!
फिर जरा-सी आहटों में
बिखर जाने पर,
दूब की उन फुनगियों पर
क्या बचा होगा?

चलो
चलकर रास्ते में पड़े
अंधे कूप में पत्थर गिराएँ,
रोशनी न सही,
तो आवाज ही पैदा करें
कुछ तो जगाएँ!

एक जंगल
अंधेरे का-रोशनी का
हर सुबह के वास्ते जंगल।
कल जहाँ पर जल भरा था
अंधेरों में
धूप आने पर वहीं दलदल!

चलो,
जंगल में कि दलदल में,
भटकती चीख को टेरें,
बुलाएँ,
पाँव के नीचे,
खिसकती रेत को छेड़ें,
वहीं पगचिह्न अपने छोड़
आएँ।

गीत

अभियान गीत

हम मजदूर-किसान चले, मेहनतकश इंसान चले
चीर अंधेरे को हम नया सवेरा लायेंगे !
ताकत नई बटोर क्रान्ति के बीज उगायेंगे !

कसने लगी शिरायें तनती गई हथेली की
खुली ग्रंथियाँ शोषण की गुमनाम पहेली की
सुलग उठे अरमान चले, हम बनकर तूफान चले
हँसिये और हथौड़े का अब गीत सुनायेंगे !

लगे फैलने पंख आज फिर गर्म हवाओं के
सीना तान खड़ा है आगे समय दिशाओं के
डाल हाथ में हाथ चले, हम सब मिलकर साथ चले
रक्त भरे अक्षर से निज इतिहास रचायेंगे !

श्रम की तुला उठाकर उत्पादन हम बाँटेंगे
शोषण और दमन की जड़ गहरे जा काटेंगे
करते लाल सलाम चले, देते यह पैगाम चले
समता और समन्वय का संसार बसायेंगे !

जो कुछ भी कहना है

जो कुछ भी कहना है
कह लो
तेजाबों से
भरी नदी में
बनकर नाव
ताव से टहलो

मौसम की
खुलती पाँखों में
चिड़िया की विस्मित
आँखों से

लेना है
तो नई सुबह लो

पिघली बर्फ
हुई खामोशी
जो हर घर है
गई परोसी

जितनी सहन-शक्ति है
सह लो

टूटें उपनिवेश के
बंधन
लौटे गीतों का
भोलापन

माचिस की तीली-सा
जल लो।

जेहन में

मेरे जेहन में
सुन्दर सपने सी
आती तुम

जैसे पकने पर
शहतूतों में लाली आती
रिसियाए होंठों पर औचक
ही गाली आती
गर्म जेठ की तपिश
छुअन से
दूर भगाती तुम

जैसे मकई के
दाने में दूध उतरता है
कपड़े पर गिरते ही जल-कण
अधिक पसरता है
वैसे ही साँसों में बनकर
गंध समाती तुम

मेरी आँखों में
है नींद नहीं तुम ही तुम हो
पूजा की थाली में रोली
अक्षत, कुमकुम हो
तृषित हिया की
भूख, प्यास औ घुटन
मिटाती तुम।

गीत

नचिकेता
पटना, बिहार

आकाश नीला

देखिए, उस पार
थर-थर काँपता
आकाश नीला!

हाँ वही आकाश
जिसमें सुबह का
सूरज उगा था
खोलकर पर उड़ानें भरने लगा
हारिल-सुगा था

जानिए
क्यों हो गया है यह समय
बकवास नीला!

क्यों गए हैं वनपखेरू
भूल,
खुलकर चहचहाना
है बिसारा डरे बच्चे के
अधर ने मुस्कराना

क्या न है यह मुक्ति के
अहसास का
उपहास नीला!

तुम न जाने क्यों
घृणा से देखते हो
राजपथ को
और मुट्ठी तानकर दुहरा रहे
पिछली शपथ को

हो गया तब्दील पतझर में
अगर
मधुमास नीला!

क्रांति का बीज बोकर नया सवेरा लाने की चाह रखने वाले नचिकेता जी के गीतों में मजदूर-किसान और मेहनतकश इंसान की आवाज सुनाई पड़ती है, शायद तभी वे कहते हैं- "हम मजदूर-किसान चले, मेहनतकश इंसान चले / चीर अंधेरे को हम नया सवेरा लायेंगे ! / ताकत नई बटोर क्रान्ति के बीज उगायेंगे!" और यह सब वे कैसे करेंगे उसका संकेत भी देते हैं इसी गीत में- "श्रम की तुला उठाकर उत्पादन हम बाँटेंगे / शोषण और दमन की जड़ गहरे जा काटेंगे / करते लाल सलाम चले, देते यह पैगाम चले / समता और समन्वय का संसार बसायेंगे!" झारखंड सरकार के पथ निर्माण विभाग में यांत्रिक अभियंता के पद से सेवानिवृत्त और अब स्वतंत्र लेखन करने वाले वरिष्ठ कवि एवं आलोचक नचिकेता हिन्दी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। सावन पूर्णिमा, '1945' को जहानाबाद (बिहार) जिला के माथुरापुर के-ऊर गाँव में जन्मे नचिकेता जी ने मेकेनिकल इंजीनियरिंग में स्नातक उपाधि प्राप्त की। गीत को कविता का सबसे आद्य रूप मानने वाले नचिकेता की अब तक कई कृतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें प्रमुख हैं- आदमकद खबरें, सुलगते पसीने, पसीने के रिश्ते, लिक्खेंगे इतिहास, बाइसकोप का गीत, सोये पलाश दहकेंगें, नचिकेता के भजन, रंग मैले नहीं होंगे, कोई क्षमा नहीं, मकर चाँदनी का उजास, तासा बज रहा है, परदा अभी उठेगा (सभी गीत संग्रह); आइना दरका हुआ (गजल संग्रह); गीत रचना की नई जमीन (आलोचना); शिनाख़्त (गीत विषयक निबंध संग्रह)। साथ ही बीज, अंतराल, अलाव तथा हरित वसुंधरा का गीत अंक 'पंख-पंख आसमान' एवं 'हुआ यकीन नहीं' उनके सम्पादन कौशल का प्रमाण हैं।

कविता

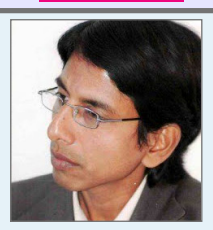

समीर श्रीवास्तव
भोपाल, म.प्र.

सहारा

कहते हैं
बुढ़ापे की लाठी
होती है संतान
जो सहारा बनती है
संबल बनती है
मदद करती है
आगे बढने में
हर पल खुश रहने में
लेकिन ये क्या
अब ऐसा समय आया है
लाठी
बुढ़ापे का सहारा नहीं रही
अब बुढापा ही तो
बन गया
लाठी
का सहारा है
बेरोजगार
पढी-लिखी संतान
अपने बूढ़ी माँ-
पिता की
सेवा तो दूर
उन पर ही बोझ
बन गए हैं
ये उनके बुढ़ापे की लाठी
तो नही बन पाए
अपितु ये संतान
उनका सहारा बनने की जगह
उनकी बुढ़ापे की कमजोर
लाठी
में स्वयं अपने लिए सहारा
ढूँढ़ रहे हैं।

लघुकथा

सुधा ओम ढींगरा
यूएसए

मूक भाषा

उसने घर के पिछवाड़े की खिड़की खोल कर देखा। नौकरानी ने ठीक कहा था, सूअरी ने बच्चों को जन्म दिया है और वह अधमरी पड़ी है। कई दिनों से उसने वह खिड़की बंद की हुई थी। नए घर बन रहे थे और एक कोने में बिल्डर ने फालतू सामान का ढेर लगा रखा था। उस ढेर पर आस-पास के घरों का कचरा भी इकट्ठा होने लगा था और साथ ही कुत्ते, सूअरों का जमावड़ा भी बढ़ गया था। वह उस खिड़की से बाहर देखते ही चिड़चिड़ी हो जाती। उसने खिड़की को बंद रखना ही उचित समझा।

आज वह वहाँ फैली गन्दगी को नहीं, बस सूअरी को देख रही थी। एक जच्चा अधमरी पड़ी थी। उसने फटाफट दूध में ब्रेड डाली और बाहर की ओर चल दी। नौकरानी ने रोका--"मैडम, सूअरी ने पाँच बच्चों को जन्म दिया था। सिर्फ एक बच्चा है अब उसके साथ। चार बच्चों का पता नहीं, कहाँ चले गए। इस हालत में अपने बच्चे को बचाने के लिए सूअरी हमला कर सकती है। आप मत जाएँ?"

पर वह जल्दी -जल्दी वहाँ पहुँची। सूअरी ने थूथन उठाकर दयनीय दृष्टि से उसे देखा। जिस बर्तन में वह दूध और ब्रेड भिगोकर लाई थी, उसने सूअरी की ओर सरका दिया। बड़ी कठिनाई से उसने वह खाया। सूअरी के पास उसका बच्चा, माँ की तरह ही निढाल पड़ा था। वह उसके सूखे स्तनों से दूध नहीं पी पाया था। कुछ दिन वह सूअरी को खिलाती रही, उसके हाथ से बनाया खाना खाकर सूअरी सेहतमंद हो गई और उसका बच्चा भी उसका दूध पीने लग गया।

उस दिन वह सूअरी के लिए हलवा ले कर गई तो वह उसे देखते ही पूँछ हिलाने लगी और उसको इशारों-इशारों से अपने पीछे ले गई। थोड़ी दूर जाकर उसने जमीन खोदी और उसके चार बच्चे वहीं मरे पड़े थे। सुअरी की आँखों से पानी की धार बहने लगी। ऐसा लगा कि एक माँ दूसरी माँ को अपना दर्द बता रही है। मूक माँ के आँसू भाषा बन गए थे- काश! आप पहले आतीं तो मेरे बच्चे बच जाते...

समाचार

'सारस्वत सम्मान' हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित

सार्थक साहित्य और रचनाधर्मिता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान-मुरादाबाद ने हिन्दी की किसी भी विधा (गद्य-पद्य) में रचनाकार को श्रेष्ठ साहित्य सृजन के लिए 'सारस्वत सम्मान' से सम्मानित करने का निर्णय लिया है।

साहित्यकार विगत दो वर्ष 2011-2013 में प्रकाशित पुस्तकों की 3-3 प्रतियाँ दिनाँक 30 सितम्बर, 2013 तक नीचे दिये गये संस्थान के पते पर प्रेषित करने की कृपा करें।

अखिल भारतीय साहित्य एवं संस्कृति संस्थान
डी-12, अवंतिका कालोनी, एम.डी.ए. मुरादाबाद-244001 (उ.प्र.)

अशोक विश्नोई (09411809222) | राजीव सक्सेना (09412677565) | शिशुपाल 'मधुकर' (09412237422)

पुस्तकें मिलीं

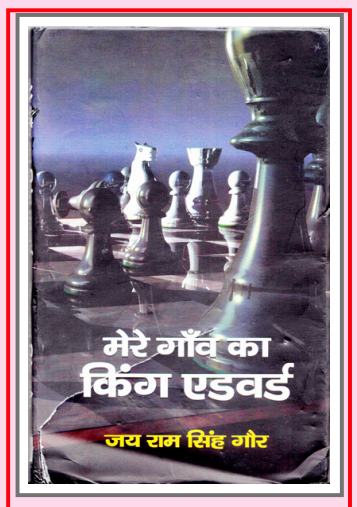

मेरे गांव का किंग एडवर्ड

(कहानी संग्रह)
लेखक : जय राम सिंह गौर
प्रकाशक : अनुभव प्रकाशन
ई 28, लाजपत नगर, साहिबाबाद, गाज़ियाबाद-5
पृष्ठः 96
मूल्यः रु 120/-

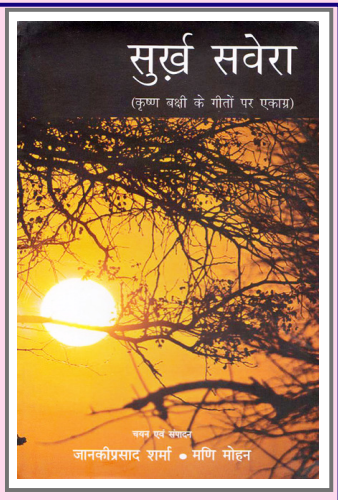

सुर्ख़ सवेरा

(कृष्ण बक्षी के गीतों पर एकाग्र)
सम्पादन : जानकीप्रसाद शर्मा, मणि मोहन
प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
नवीन शाहदरा, दिल्ली - 32
पृष्ठः 236
मूल्यः रु 495/-

अजनबी चेहरों के बीच

(काव्य संग्रह)
कवि : शिशुपाल मधुकर
प्रकाशक : सागर तरंग प्रकाशन
मुरादाबाद - 01
पृष्ठः 104
मूल्यः रु 100/-

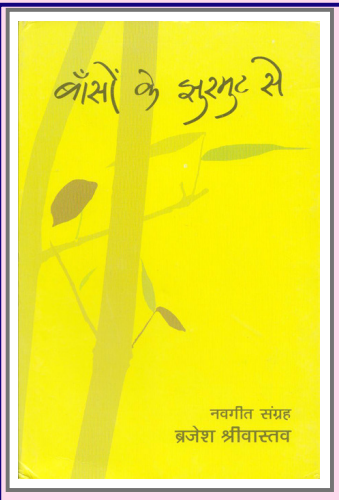

बांसों के झुरमुट से

(नवगीत संग्रह)
कवि : ब्रजेश श्रीवास्तव
प्रकाशक : उत्तरायण प्रकाशन
एल०डी०ए० कालोनी , कानपुर रोड
लखनऊ -12
पृष्ठ : 112
मूल्यः रु 250/-

ओ, गीत के गरुड़!

(गीत संग्रह)
कवि : चन्द्रसेन विराट
प्रकाशक : समान्तर पब्लिकेशन
तराना, उज्जैन, म.प्र.
पृष्ठः 160
मूल्यः रु 250/-

चर्चा में

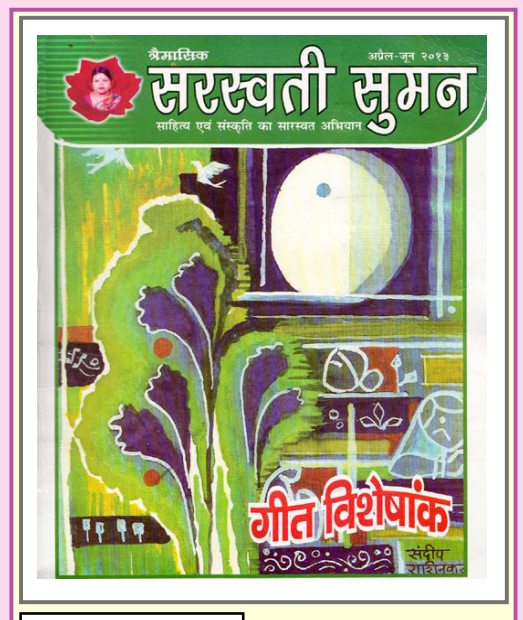

पृष्ठः 160, मूल्य : रु 50/-

गीत विशेषांक

पत्रिका : सरस्वती सुमन (अप्रैल-जून-2013)
अतिथि सम्पादक : डॉ धनंजय सिंह
प्रधान सम्पादक : डॉ आनन्दसुमन सिंह
सम्पर्क : 1 - छिब्बर मार्ग (आर्यनगर), देहरादून - 01